International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

तमिलनाडु लोक साहित्य एवम संस्कृति

डॉ. चिलूका पूष्पलता

हिन्दी विभाग – अध्यक्षा, दयानंद सागर कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शाविगे मल्लेश्वरा हिल्स कुमारस्वामी लेआउट –बेंगलुरु

Abstract:
लोक सहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक-साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोक- साहित्य शब्द दो शब्दो के योग से गठित है जो इस बात का अभिप्राय है कि लोक जीवन में प्रयुक्त साहित्य,जिसका सृजन स्वयं लोक द्वार हुआ हो ।

Keywords: लोक सहित्य, मर्मि समीक्षक एवं विद्धान्, संस्कृत, प्रवृत्तियॉ , शतसाहस्त्री संहिता।

भूमिका

लोक साहित्य लोकजीवन की अभिव्यक्ति है वह जीवन से घनिष्टता से संबंधित है, लोक तथा साहित्य एक पारिभाषिक शब्द है जो लोक तथा साहित्य से मिलकर बना है। अंमभिक शब्द साहित्य में वेद के साथ भी मिलता है, लोक वेद की चर्चा भी सुनी जाती है, किन्तु वेद में कही गई बात वैदिक और लोक में कही बात लौकिक कहलाएंगी वास्तव में लोक साहित्य शब्द अंग्रेजी के फोकलिटरेचर का अनुवाद है ।

संस्कृति का अध्ययन करना हो तो वहाँ के लोकसाहित्य का विशेष अवलोकन करना पड़ेगा। यह लिपिबद्ध बहुत कम और मौखिक अधिक होता है। वैसे हिंदी लोकसाहित्य को लिपिबद्ध करने का प्रयास इधर कुछ वर्षों से किया जा रहा है और अनेक ग्रंथ भी संपादित रूप में सामने आए हैं किंतु अब भी मौखिक लोकसाहित्य बहुत बड़ी मात्रा में असंगृहीत है। डॉ॰ सत्येन्द्र के अनुसार - "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो आभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है। (1) "लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोककथाओं में मिल-ता है, वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोकसाहित्य में लोक-मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती-गुनगुनाती है। लोक-साहित्य में निहित सौंदर्य का - मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य आदिकाल से श्रुति एवं स्मृति के सहारे जीवित रहनेवाले लोकसाहित्य के कुछ विशेष सिद्धांत हैं। इस साहित्य में मुख्य रूप से वे रचनाएँ ही स्वीकार की जाती हैं अथवा जीवन पाती हैं जो अनेक कंठों से अनेक रूपों में बन बिगड़कर एक सर्वमान्य रूप धारण कर लेती हैं। यह रचनाक्रम आदिकाल से अबतक जारी है। ऐसी बहुत सी साहित्यक सामग्री आज भी प्रचलित है जो अभी एकरूपता नहीं ग्रहण कर पाई हैं। परंपरागत एवं सामूहिक प्रतिभाओं से निर्मित होने के कारण विद्वानों ने लोकसाहित्य को है। दी संज्ञा की "अपौरुषेय" निश्चय ही परंपरागत लोकसाहित्य किसी एक व्यक्ति की रचना का परिणाम नहीं है। वैसे तो इसके कई प्रमाण दिए जा सकते हैं कि एक ही गीत, कथा या कहावत एक स्थल पर जिस रूप में होता है दूसरे स्थल पर पहुँचते है जाता बदल रूप वह उसका पहुँचते-

जानेवाले गाए से वर्ष सैकड़ों कि होगा यह प्रमाण अच्छा एक किंतु लोकमहाकाव्य आल्हखंड- को आज तक एकरूपता नहीं प्राप्त हो सकी। इस कार्य में लोकप्रवृत्ति किसी प्रतिबंध को स्वीकार ही नहीं करती। स्फुट गीतों में तो केवल पंक्तियाँ ही इधर उधर होती हैं किंतु प्रबंध गीतों भी घटनाएँ में कथाओं एवं (गाथाओं)बदलती रहती हैं।

तमिल लोक साहित्य की उत्पत्ति:

तमिल साहित्य की एक समृद्ध और लंबी साहित्यिक परंपरा है जो दो हजार वर्षों से अधिक समय तक फैली हुई है। सबसे पुराने मौजूदा कार्य परिपक्वता के संकेत दिखाते हैं जो विकास की एक लंबी अवधि का संकेत देते हैं। तमिल साहित्य के योगदानकर्ता मुख्य रूप से दक्षिण भारत के तमिल लोगों से हैं, जिसमें अब तमिलनाडु, केरल, श्रीलंका के ईलम तमिल, साथ ही तमिल प्रवासी शामिल हैं।

ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर ईसा के पश्चात दूसरी शताब्दी तक लिखे गए (लगभग) तमिल साहित्य को संगम साहित्य कहते हैं। लोककथाओं के अनुसार तमिल शासकों ने कुछ समयान्तरालों की अवधि में सम्मेलनों का आयोजन किया जिसमें लेखक अपने ज्ञान की चर्चा तर्कवितर्क के रूप में करते थे। ऐसा करने से तमिल साहित्य का उत्तरोत-ृतर विकास हुआ। संगम साहित्य के अन्तर्गत ४७३) कवियों द्वारा रचित २३८१) पद्य हैं। इन कवियों में से कोई १०२) कवि अनाम हैं।

दक्षिण भारत के प्राचीन इतिहास के लिये संगम साहित्य की उपयोगिता अनन्य है। इस साहित्य में उस समय के तीन राजवंशों का उल्लेख मिलता है : चोल, चेर और पाण्ड्य। संगम तमिल कवियों का संघ था जो पाण्ड्य शासको के संरक्षण में हुए थे। कुल तीन संगमों का जिक्र हुआ है।प्रथम संगम मदुरा में अगस्त्य ऋषि के अध्यक्षता में हुआ था।

तमिल साहित्य का इतिहास विभिन्न अवधियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रुझानों का बारीकी से अनुसरण करते हुए तमिलनाडु के इतिहास का अनुसरण करता है। प्रारंभिक संगम साहित्य, जो 300 ईसा पूर्व से पहले का है, में प्रेम, युद्ध, सामाजिक मूल्यों और धर्म सहित जीवन के कई पहलुओं से संबंधित विभिन्न कवियों के संकलन शामिल हैं।

इसके बाद शैव, वैष्णव, आजीविका, जैन और बौद्ध लेखकों और कवियों द्वारा लिखित प्रारंभिक महाकाव्य और नैतिक साहित्य 5वीं शताब्दी सीई तक चला। 6वीं से 12वीं शताब्दी तक, नयनमारों (शैव धर्म के संतों) और अलवरों (वैष्णववाद के संतों) द्वारा लिखी गई तमिल भक्ति कविताओं ने महान भक्ति आंदोलन की शुरुआत की, जिसने बाद में पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को अपनी चपेट में ले लिया।

यह इस युग के दौरान था कि कम्बरामायनम और पेरिया पुराणम जैसे तमिल साहित्यिक क्लासिक्स के कुछ सबसे बड़े लेखक थे और कई कवियों को शाही चोल और पांड्य साम्राज्यों द्वारा संरक्षण दिया गया था। बाद के मध्ययुगीन काल में कई मिश्रित छोटे साहित्यिक कार्यों और कुछ मुस्लिम और यूरोपीय लेखकों के योगदान भी देखे गए।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से तमिल साहित्य का पुनरुत्थान हुआ जब धार्मिक और दार्शनिक प्रकृति के कार्यों को एक ऐसी शैली में लिखा गया जिससे आम लोगों को आनंद लेना आसान हो गया। आधुनिक तमिल साहित्यिक आंदोलन सुब्रमण्यम भारती, बहुआयामी भारतीय राष्ट्रवादी कवि और लेखक के साथ शुरू हुआ, और बहुत से लोगों द्वारा इसका अनुसरण किया गया, जिन्होंने जनता को प्रभावित करने के लिए साहित्य की शक्ति का उपयोग करना शुरू किया। साक्षरता के

विकास के साथ तमिल गद्य का विकास और विकास होने लगा। लघु कथाएँ और उपन्यास छपने लगे। आधुनिक तमिल साहित्यिक आलोचना भी विकसित हुई। तमिल सिनेमा की लोकप्रियता ने कुछ परस्पर समृद्ध तरीकों से तमिल साहित्य के साथ भी बातचीत की है।

तमिल लोक साहित्यिक विधाओं का वर्गीकरण:

1. तमिल उपन्यास:

साहित्य की एक शैली के रूप में उपन्यास 19वीं शताब्दी की तीसरी तिमाही में तमिल में आया, अंग्रेजी लेखकों के साथ लोकप्रिय होने के एक सदी से भी अधिक समय बाद। इसके उदय को शायद पश्चिमी शिक्षा और लोकप्रिय अंग्रेजी उपन्यासों के संपर्क में आने वाली तमिलों की बढ़ती आबादी से मदद मिली। मायावरम वेदनायगम पिल्लई ने पहला तमिल उपन्यास प्रताप मुदलियार चरित्रम 1879 में लिखा था। यह दंतकथाओं, लोक कथाओं और यहां तक कि ग्रीक और रोमन कहानियों के वर्गीकरण के साथ एक रोमांस था, जिसे मुख्य उद्देश्य के रूप में पाठक के मनोरंजन के साथ लिखा गया था।

2. लोकप्रिय उपन्यास

1930 के दशक से तमिलनाडु में अपराध और जासूसी कथाओं ने व्यापक लोकप्रियता हासिल की है। स्वतंत्रता से पहले के वर्षों में लोकप्रिय लेखकों में कुरुंबुर कुप्पुसामी और वडुवुर दुरैसामी अयंगर शामिल थे। 1950 और 1960 के दशक में, तमिलवन के जासूसी नायक शंकरलाल ने बहुत कम हिंदी या अंग्रेजी ऋण शब्दों के साथ शुद्ध तमिल का उपयोग करते हुए पाठकों को विभिन्न विदेशी स्थानों पर पहुंचाया।

ये लेखक अक्सर सैकड़ों या हजारों लघु उपन्यासों के साथ, और एक मासिक पत्रिका में प्रकाशित एक या एक से अधिक लघु उपन्यासों के साथ, अक्सर बेहद विपुल होते हैं। एक अन्य लोकप्रिय आधुनिक लेखक, इंद्र सौन्दर राजन, आमतौर पर हिंदू पौराणिक कथाओं पर आधारित अलौकिक अपराध थ्रिलर लिखते हैं।

1940 और 1950 के दशक में कल्कि कृष्णमूर्ति अपने ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों के लिए उल्लेखनीय थे।1950 और 60 के दशक में, चांडिल्यन ने मध्यकालीन भारत या मलेशिया, इंडोनेशिया और यूरोप के साथ मध्ययुगीन व्यापार मार्गों पर स्थापित कई लोकप्रिय ऐतिहासिक रोमांस उपन्यास लिखे।

लोक साहित्यिक विधाओं का क्षेत्रः

साहित्य में पतिनेमेल्कणक्कू (तमिल: பதினெண்மேல்கணக்கு) के रूप में जाना जाने वाला अठारह महान ग्रंथ, सबसे पुरानी जीवित तमिल कविता का संग्रह है।

यह संग्रह संगम साहित्य का हिस्सा माना जाता है और लगभग 100 ईसा पूर्व और 200 सीई के बीच का है। अठारह प्रमुख संकलनों की एक श्रृंखला, इसमें आठ संकलन (एट्टुथोकाई) और दस आइडिल (पट्टुपट्टू) शामिल हैं। अठारह ग्रेटर टेक्स्ट एंथोलॉजी में गाने अकाल शैली में सेट किए गए हैं।

अठारह ग्रेटर टेक्स्ट एंथोलॉजी में 2,381 कविताएँ शामिल हैं जिनमें टेन आइडिल्स संग्रह से संबंधित दस बड़े कार्य शामिल हैं। इन कविताओं का श्रेय 473 कवियों को जाता है। 473 में से सोलह कवि 2,279 कविताओं में से 1,177 के

लिए जिम्मेदार हैं, जिसके लिए लेखक का नाम जाना जाता है। कुल मिलाकर, 102 कविताएँ गुमनाम हैं। विशेष रूप से, पथिरुपथु संग्रह विशेष रूप से चेरल राजाओं (केरल से) से कविता एकत्र करता है, जबकि अन्य संग्रहों में विविध तमिल राजाओं द्वारा संरक्षित कविता का मिश्रण होता है।

1. नामकरण और परंपरा

संगम का शाब्दिक अर्थ है "सभा, बैठक, बंधुत्व, अकादमी"। तमिल भाषा और साहित्य के एक विद्वान डेविड शुलमैन के अनुसार, तमिल परंपरा का मानना है कि संगम साहित्य तीन कालखंडों में सुदूर पुरातनता में उत्पन्न हुआ, प्रत्येक कई सहस्राब्दियों तक फैला रहा।

पहले की जड़ें हिंदू देवता शिव, उनके पुत्र मुरुगन, कुबेर के साथ-साथ प्रसिद्ध ऋग्वैदिक कवि अगस्त्य सहित 545 संतों में हैं। शुलमैन कहते हैं, किंवदंती के अनुसार, पहली अकादमी, चार सहस्राब्दियों तक फैली हुई थी और मदुरै के आधुनिक शहर के दक्षिण में दूर स्थित थी, एक स्थान बाद में "समुद्र द्वारा निगल लिया गया" था। दूसरी अकादमी, जिसकी अध्यक्षता भी बहुत लंबे समय तक रहने वाले अगस्त्य ने की थी, पूर्वी समुद्र तटीय कपाटपुरम के पास थी और तीन सहस्राब्दियों तक चली।

हालांकि, संगम कथा का सबसे पहला ज्ञात उल्लेख लगभग सातवीं शताब्दी सीई में अप्पर द्वारा तिरुपुत्तूर तंतकम में प्रकट होता है, जबकि एक विस्तारित संस्करण बारहवीं शताब्दी के तिरुविलायताल पुराणम में पेरुमपराप नम्पी द्वारा प्रकट होता है। किंवदंती बताती है कि 449 कवि विद्वानों के तीसरे संगम ने उत्तरी मदुरै (पांड्यन साम्राज्य) में 1,850 वर्षों तक काम किया। उन्होंने तमिल कविताओं के छह संकलनों (बाद में एत्तुत्तोकाई का एक हिस्सा) की सूची दी है:

- नेतुंटोकाई नानूरू (400 लंबी कविताएँ)
- कुरुंतोकाइ अनुरु (400 लघु कविताएँ)
- नरिनाई (400 तिनै परिदृश्य कविताएं)
- पुराणानुरू (400 बाहरी कविताएँ)
- ऐंकुरुनुरु (500 बहुत छोटी कविताएँ)
- पतिरुपट्टु (दस दस)

2. वर्गीकरण

संगम साहित्य को मोटे तौर पर अकम (அகம், भीतरी) और पुरम (புறம், बाहरी) में वर्गीकृत किया गया है। अकम कविता रोमांटिक प्रेम, यौन मिलन और कामुकता के संदर्भ में भावनाओं और भावनाओं के बारे में है। पुरम कविता युद्ध और सार्वजनिक जीवन के संदर्भ में कारनामों और वीर कार्यों के बारे में है। संगम काव्य का लगभग तीन-चौथाई अकम विषयगत है, और लगभग एक चौथाई पुरम है।

संगम साहित्य, अकम और पुरम दोनों को सात छोटी शैलियों में उप-वर्गीकृत किया जा सकता है जिन्हें तिनै (திணை) कहा जाता है। यह छोटी शैली उस स्थान या परिदृश्य पर आधारित है जिसमें कविता सेट की गई है। ये हैं: कुसिन्ची (குறிஞ்சி), पर्वतीय क्षेत्र; मुलई (முல்லை), चारागाह वन; मारुतम (மருதம்), नदी की कृषि भूमि; नेतल

(நெய்தல்) तटीय क्षेत्र; पाली (பாலை) शुष्क। अकम कविता के लिए भू-दृश्य आधारित तीनाओं के अलावा, ऐन-टिनाई (अच्छी तरह से मेल खाते हुए, परस्पर प्रेम), कैक्कीलाई (बीमार मिलान, एक तरफा), और पेरुन्थिनै (अनुपयुक्त, बड़ी शैली) श्रेणियों का उपयोग किया जाता है। ऐंकुरुनुरु - 500 लघु कविता संग्रह - आपसी प्रेम कविता का एक उदाहरण है।

3. महत्व

संगम साहित्य संस्कृत के समानांतर दक्षिण भारत में स्वदेशी साहित्यिक विकास और तमिल भाषा की शास्त्रीय स्थिति का ऐतिहासिक प्रमाण है। जबकि पहले और दूसरे पौराणिक संगमों के लिए कोई सबूत नहीं है, जीवित साहित्य प्राचीन मदुरै (मतुरई) के आसपास केंद्रित विद्वानों के एक समूह को प्रमाणित करता है, जिसने "प्राचीन तमिलनाडु के साहित्यिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और भाषाई जीवन" को आकार दिया, ज़ेलेबिल कहते हैं।

संगम साहित्य प्राचीन तमिल संस्कृति, धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक विश्वासों और लोगों के कुछ पहलुओं में एक खिड़की प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, संगम युग में ऐंकुरुनुरु कविता 202 "ब्राह्मण लड़कों की पिगटेल" के शुरुआती उल्लेखों में से एक है। ये कविताएँ ऐतिहासिक घटनाओं, प्राचीन तमिल राजाओं, प्रियजनों और परिवारों पर युद्ध के प्रभाव का भी संकेत देती हैं।

4. चिलप्पटिकाराम

सिलप्पाटिकाराम को सिलप्पाथिकरम या सिलप्पाटिकाराम के रूप में भी जाना जाता है, यह सबसे पुराना तमिल महाकाव्य है। यह लगभग पूरी तरह अकवल (अकिरियम) मीटर में 5,730 पंक्तियों की एक कविता है।

5. मनिमेकलाई

मणिमेखलाई, जिसे मणिमेखलाई या मणिमेक्कलाई भी कहा जाता है, एक तमिल महाकाव्य है, जिसकी रचना संभवत: 6वीं शताब्दी के आसपास कुलवानिकिक सिट्टालिक कटार ने की थी। यह एक बौद्ध "प्रेम-विरोधी" सिलप्पादिकारम की अगली कड़ी है, जिसमें इसके कुछ पात्र और उनकी अगली पीढ़ी है। महाकाव्य में अकवल मीटर में 4,861 पंक्तियाँ हैं, जो 30 सर्गों में व्यवस्थित हैं। मणिमेक्कलई कोवलन और माधवी की बेटी हैं, जो एक नर्तकी और एक बौद्ध नन के रूप में अपनी मां के नक्शेकदम पर चलती हैं। महाकाव्य उसकी कहानी कहता है।

6. शिवक चिंतामणि

सिवाका चिंतामणि, 10वीं शताब्दी सीई का एक महाकाव्य, एक जैन भिक्षु थिरुथक्का थेवर द्वारा लिखा गया था। महाकाव्य को 13 सर्गों में व्यवस्थित किया गया है और इसमें विरुत्तम काव्य मीटर में 3,145 चतुर्थांश शामिल हैं। यह एक ऐसे राजकुमार की अलौकिक काल्पनिक कहानी का वर्णन करता है जो सभी कलाओं का सिद्ध स्वामी, उत्तम योद्धा और असंख्य पत्नियों वाला पूर्ण प्रेमी है। महाकाव्य एक विश्वासघाती तख्तापलट की कहानी से शुरू होता है, जहां राजा अपनी गर्भवती रानी को मोर के आकार की वायु मशीन में भागने में मदद करता है लेकिन खुद मारा जाता है। रानी ने एक लड़के को जन्म दिया है। वह उसे पालने के लिए एक वफादार नौकर को सौंप देती है और खुद एक नन बन जाती है।

7. कुण्डलकेसि

कुंडलकेशी महाकाव्य आंशिक रूप से आधुनिक युग में टुकड़ों में बच गया है, जैसे सदियों बाद लिखी गई टिप्पणियों में। इन अंशों से, यह एक हिंदू या जैन व्यापारी जाति की कुंडलकेशी नाम की लड़की के बारे में एक दुखद प्रेम कहानी प्रतीत होती है।

शैली:

महान तमिल (12 वीं -13 वीं शताब्दी सीई) ने लिखा है कि कविताएँ दो प्रकार की थीं - कर्नल थोडार निलई सेयू (*சொல் தொடர் நிலை செய்யுள் செய்யுள்*) या उनके औपचारिक गुणों के गुण से जुड़ी कविताएँ और पोरु! टू या ऐसी सामग्री के आधार पर जुड़ी कविताएँ जो एकता बनाती हैं। तमिल में ऐसे छंदों को काव्य और कप्पियम के रूप में परिभाषित किया गया है। व्याकरण नन्नुल पर मयिलाईनाथर की टिप्पणी (14 वीं शताब्दी सीई) में, तमिल साहित्य के पांच महान महाकाव्य, एम्पेरुमकापियम का पहला उल्लेख है।

इन महाकाव्यों में से प्रत्येक में लंबे सर्ग हैं, जैसे कि सिलप्पाटिकाराम में, जिसमें 30 को कहानी में किसी भी पात्र द्वारा गाए गए एकालाप के रूप में या किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं के एकालाप के रूप में संदर्भित किया गया है, जो उसके द्वारा ज्ञात या देखे गए संवादों से संबंधित है। इसमें अकवल मीटर में रचित 25 सर्ग हैं, जिनका उपयोग संगम साहित्य की अधिकांश कविताओं में किया गया है। इस मीटर के विकल्प को ऐकिरुकाप्पु (शिक्षकों का छंद) कहा जाता है, जो विद्वान हलकों में रचित पद्य से जुड़ा होता है। अकावल क्रिया अकावु का एक व्युत्पन्न रूप है जिसका अर्थ है "कॉल करना" या "बेकन"। सिलाप्पटिकाराम इस दावे का एक उदाहरण है कि लोक गीतों ने साहित्यिक संस्कृति को सबसे अच्छी तरह से बनाए रखने वाली संस्कृतियों के साथ लोक मूल में वापस लाया।

मनिमेकलाई अहावल मीटर में एक महाकाव्य है और प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन की अपनी सरल और सुरुचिपूर्ण शैली के लिए विख्यात है। सिवाका चिन्तामणि तमिल साहित्य की आरंभिक कृतियों में से एक है, जिसमें विरुथा पा नामक लंबी छंदें हैं।

आलोचना और तुलना:

"एक कविता की अंतिम पंक्ति के बाद, साहित्यिक आलोचना के अलावा कुछ भी नहीं होता है," सिलाप्पटिकाराम में इत्सको कहते हैं। पोस्टस्क्रिप्ट पाठकों को काम की समीक्षा करने के लिए आमंत्रित करता है।

अपरिचित और समझने में कठिन होने के कारण पाँचों कविताओं की आलोचना की जाती है। कुछ आलोचकों के लिए, मणिमेक्कलै सिलप्पाटिकाराम से अधिक दिलचस्प है, लेकिन साहित्यिक मूल्यांकन में, यह कम लगता है। मनिमेकलाई की कहानी अपने सभी सतही तत्वों के साथ उस लेखक के लिए कम दिलचस्प लगती है जिसका उद्देश्य बौद्ध धर्म के प्रसार की ओर इशारा करना था। पूर्व में, नैतिकता और धार्मिक कलात्मक हैं, जबकि बाद में मामला उल्टा है। मनिमेकलाई जैन धर्म की आलोचना करती है और बौद्ध धर्म के आदर्शों का प्रचार करती है, और मानव हित अलौकिक विशेषताओं में पतला होता है। अकवल छंद में वर्णन मणिमेकलै में बिना किसी गीत के राहत के आगे बढ़ता है, जो कि चिलप्पटिकाराम की मुख्य विशेषताएं हैं। शुद्धतावादी शब्दों में मणिमेक्कलै एक महाकाव्य कविता नहीं है, बल्कि दर्शन पर एक गंभीर खोज है।

सिलप्पाटिकाराम में गीत या नृत्य के रूप में प्रवाह होता है, जो पश्चिमी दर्शकों के साथ अच्छा नहीं होता है क्योंकि उनका मूल्यांकन क्षणिक प्रेरणा से प्रेरित होने के लिए किया जाता है। कलकत्ता समीक्षा का दावा है कि तीनों कार्यों में कुल मिलाकर कोई कथानक नहीं है और एक महाकाव्य शैली के लिए अपर्याप्त लंबाई का लक्षण वर्णन है। उनका मानना है कि शिवक चिन्तामणि का कथानक नीरस है और शक्ति और चरित्र में विविधता में कमी है और एक महाकाव्य की गुणवत्ता को खड़ा नहीं करता है।

उपसंहार:

भारतवर्ष के विभिन्न जनपदों के लोक-साहित्य के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आ चुका है कि सभी जनपदों के लोक-साहित्य की मूलधारा एक ही है। एक-सी लोक-संस्कृति जनपदों के लोक-साहित्य में अभिव्यक्त मिलती है। अभी आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से 'ब्रज-माधुरी' कार्यक्रम के अन्तर्गत इस प्रकार की वार्ताओं की श्रृंखला प्रसारित की गयी थी, जिसमें ब्रज़ और अन्य भारतीय जनपदों के लोक-गीतों का तुलनात्मक अध्ययन करके भाव-साम्य के अनेक स्थलों पर प्रकाश डाला गया था। इससे भारत की राष्ट्रीय एकता की स्थापना एवं सुरक्षा में पर्याप्त सहायता मिलेगी। राष्ट्रीय जीवन में लोक-साहित्य की महत्ता को दृष्टिपथ में रखकर डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय ने उसे छः वर्गों में रेखांकित किया है- (1) ऐतिहासिक महत्त्व, (2) भौगोलिक-आर्थिक महत्त्व, (3) सामाजिक महत्त्व, (4) धार्मिक महत्त्व, (5) नैतिक महत्त्व, (6) भाषा-शास्त्र-सम्बन्धी महत्त्व ।

प्रकरण को लम्बा होने से बचाने के लिए हम इन वर्गों में से प्रतीक रूप में केवल ऐतिहासिक महत्त्व की चर्चा करते हुए लोक-गीतों की राष्ट्रीय भूमिका की चर्चा करेंगे। डॉ० उपाध्याय ने लिखा है-"लोक-गीतों तथा गाथाओं में स्थानीय इतिहास का पुट बड़ा गहरा है, जिनके उद्घाटन से हमारे विलुप्त तथा विस्मृत इतिहास पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है तथा बिखरी हुई इतिहास की अनेक कड़ियाँ जोड़ी जा सकती हैं। उत्तरप्रदेश के बलिया जिले में 'हल्दी' एक छोटा- सा गाँव है जहाँ कुछ काल पूर्व हैहयवंशी क्षत्रिय राज्य करते थे, जिनके वंशज आज भी मौजूद हैं। इन राजाओं की बिहार राज्य के शाहाबाद जिले के डुमराँव के राजघराने से बड़ी तनातनी रहती थी। बलिया जिले के बैरिया नामक गाँव के निवासी एक भूमिहार जमींदार थे जिनका नाम बहोरन पाण्डेय था। ये डुमराँव के राजा के मैनेजर थे। एक बार बहोरन पाण्डेय पालकी में बैठकर हल्दी गाँव से होते हुए कहीं जा रहे थे। उस समय ग्रामीण बालकों को खेत में गाते हुए इन्होंने यह सुना कि-

राजा भइले रजुली, बहोरन भइले धुनिया ।

मारेले दलगंजनदेव, दलकेले दुनिया ।

अर्थात् डुमराँव के राजा रजुली-बहुत छोटा है-और बैरिया के जमींदार बहोरन पाण्डेय जुलाहा - धुनिया हैं। हल्दी के राजा दलगंजनदेव के प्रताप के कारण सारी पृथ्वी काँपती है। लड़कों के इस गीत को सुनकर बहोरन पाण्डेय बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने डुमराँव गाँव के राजा से बच्चों के गीत की कथा कह सुनायी। इस गीत को सुनते ही डुमराँव के राजा अत्यन्त क्रोधित हो गये और उन्होंने हल्दी के राजा के ऊपर आक्रमण कर उनको परास्त कर दिया।यह एक स्थानीय घटना है, जिससे हल्दी और डुमराँव के राजाओं के पारस्परिक संघर्ष का पता चलता है।

लोक-साहित्य में जहाँ आदर्श पतिव्रता नारियों का उल्लेख है, वहाँ ऐसी कर्कशा स्त्रियों का भी वर्णन पाया जाता है जो विधवा होने के लिए सूर्य भगवान् से प्रार्थना करती हैं। जहाँ माता और पुत्री का दिव्य प्रेम दिखलाया गया है, वहाँ सास-

बहू तथा भावज-ननद के कटु एवं विषाक्त व्यवहार का वर्णन भी है। भाई और बहन के निस्पृह, पवित्र और दिव्य प्रेम का वर्णन करने के लिए जो भी विशेषण प्रयुक्त किया जाय, वह थोड़ा ही होगा।"

"लोक-साहित्य और समाज का सम्बन्ध इसलिए निर्विवाद है कि लोक और समाज परम्परावलम्बी हैं। किसी भी युग में लोक बिना समाज के और समाज बिना लोक नहीं हो सका।'

शिष्ट - साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब कहा जाता है, तब तो लोक- साहित्य को समाज की आत्मा का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब कहा जाना चाहिये।

लोक-साहित्य में सर्वभूतहिताय और सर्वजनसुखाय की भावना प्रचुर परिमाण में पायी जाती है। गाँवों में परोपकार के लिए कुँआ खोदवाने, तालाब बनवाने और बाग लगवाने की प्रथा चिरकाल से चली आ रही है। ऐसा कार्य जिससे दूसरे मनुष्यों को सुख मिले, ग्रामीण लोगों को अधिक प्रिय होता है। एक लोक-गीत में यह भाव व्यक्त किया गया है कि कुँआ खोदने का फल यह है कि पानी भरने वाली पनिहारिनों की भीड़ लगे। आम के पेड़ों को लगाने का उद्देश्य यह है कि बटोही मनचाहा फल तोड़ कर खाया करें। तालाब बनवाने की सार्थकता उसमें है कि मनुष्य, पक्षी, पशु सभी इसके शीतल जल का उपयोग कर आनन्द-लाभ करें। स्त्री-जन्म की सफलता इसी में मानी जाती है कि उसकी गोद पुत्र रत्न से सुशोभित होती रहे।

सारः

लोक सहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक-साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोक- साहित्य शब्द दो शब्दो के योग से गठित है जो इस बात का अभिप्राय है कि लोक जीवन में प्रयुक्त साहित्य,जिसका सृजन स्वयं लोक द्वार हुआ हो । लोक साहित्य यह वह साहित्य जो हमारे इतिहास की प्रतिष्टा है,जो आज कही न कही लुपत होती जा रही है । लोक शब्द संस्कृत के लोकृदर्शने धातु से घञ् प्रत्यय संलग्न करने पर निष्पन्न हुआ है । लोक शब्द अत्यन्त प्राचीन है । साधारण जनता के अर्थ में इसका प्रयोग ऋग्वेद में अनके स्थानों पर किया गया है । ऋग्वेद में लोक के लिए जन का भी प्रयोग उपलब्ध होता है । वैदिक ऋषि कहते है कि विश्वामित्र के द्वारा उच्चारित यह ब्रह्म या मन्त्र भारत की रक्षा करता है ।

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के चौदहवें अध्याय में अनेक नाट्यधर्मा तथा लोकधर्मा प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है । महर्षि व्यास ने अपनी शतसाहस्त्री संहिता की विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह ग्रन्थ (महाभारत) अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे होकर व्याथित लोक (साधारण जनता) की आँखों को ज्ञानरूपी अंजन की शलाका लगाकर खोल देता है—

अज्ञानतिमिरान्धस्य लोकस्य तु विचेष्टतः ।
ज्ञानाञ्जनशलाकाभिर्नेत्रोन्मीलनकारकम् ।।

अंग्रेजी में उल्लिखित दि पोयट्री ऑफ दी पीपुल्स ,बाइ दि पीपुल,फॉर दी पीपुल के परिसन्दर्भ में डॉ. सत्येन्द्र ने इस प्रकार दी है – लोक साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें –

(क) आदिम मानस के अवशेष उपलब्ध हों,

(ख) परम्परा मौखिक क्रम से उपलब्ध या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो और जो लोक- मानस की वृर्ति में समाई हुई हो ।

(ग) कृतित्व हो किन्तु वह लोक-मानस के सामान्य तत्त्वों से युक्त हो कि उसके किसी व्यक्तित्व के साथ सम्बद्ध रहते हुए भी, लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृती स्वीकार करें । लोक-साहित्य के मर्मि समीक्षक एवं विद्धान् डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक शब्द पर दृष्टिनिक्षेप करते हुए लिखा है- "जो लोग संस्कृत या परिष्कृत वर्ग से प्रभावित न होकर अपनीन पुरातन स्थितियों में ही रहते हैं,वे लोक होते हैं"।

संदर्भ ग्रथ-सुचीः

1. वनममले, एन. : कट्टप पोम्मन कप पडलकल ।
2. वनममले, एन. : तमिलार नदुप पडलकल । : तमिलार नट्टुप पमरार पडलकल ।
3. वनममले, एन. : वीनातिवीनम् कथं ।
4. वनममले, एन.: स्टडीज इन तमिल फोक लिटरेचर ।
5. (पांचों न्यू संचरी बुक हाउस, मद्रास 2. द्वारा प्रकाशित ।)
6. वरदराजन, एम.: द इंफ्लुएंस ऑफ फोकलोर ऑन तमिल लिटरेचर । (ॲनल्स ऑफ ओरिएंटल रिसर्च, XIII, प्रथम खंड, यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास ; 19701)
7. वल्लिअप्पा, ए. एल.: पामर मक्कलिन परंपरैप पडलकल । (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1970)
8. वीरसामी, बी. : सन इन शंखम् ।(जर्नल ऑफ द डिपार्टमेंट ऑफ तमिल, प्रथम खंड, यूनिर्वातटी ऑफ केरल, त्रिवेंद्रम, मार्च, 19701)
9. श्यामला, एन. : फोक म्यूजिक एंड डांस ऑफ तमिलनाडु । (यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास, 19601)
10. श्यामला, एन. : सर्वे एंड रिसर्च ऑन फोक म्यूजिक, डांस एंड ड्रामा ऑफ तमिलनाडु ।(मद्रास राज्य संगीत नाटक संघ के संघटित रिपोर्ट जनवरी, 1962।)